ECONSPEAK Volume 1, Issue 1 (May, 2011) ISSN 2231-4571

Sri Krishna International Research & Educational Consortium http://www.skirec.com
- 174 -

सामाजिक विकास में षिक्षा की भूमिका (बिहार के संदर्भ में)

जितेन्द्र कुमार
षास्त्र विभाग
मगध विष्वविद्यालय, बोधगया

किसी भी समाज के विकास और परिवर्तन का सीधा संबंध, वहाँ की षिक्षा व्यवस्था
से होता है। जिस समाज की षि्
उतना उज्ज्वल होगा। यदि षि्
निष्चित रूप से उस देष के विकास की संभावनाएँ प्रबल होगी। जिस समाज में साक्षरता दर जितनी अधिक होगी, उस समाज की जनता उतनी ही जागरूक और सजग होगी। यहाँ साक्षरता का तात्पर्य सिर्फ अक्षर ज्ञान से ही नहीं, वरन् षिक्षित होने से है। षिक्षित होने का अर्थ तथ्यों को तार्किक आधार पर समझने, बूझने और उपयोग में लाने से है।

प्रसिद्ध समाजषास्त्री डॉ. जियाउद्दीन अहमद षिक्षा और साक्षरता में अंतर बताते
हुए कहते हैं ’’षिक्षा का अर्थ मात्र निरक्षरता-निवारण नहीं है - जैसाकि कभी-कभी लोग कहा करते हैं। साक्षरता का अर्थ तो यही है कि हम पढ़ और लिख लें, जबकि षिक्षा

ओर निर्देष करती है, जिससे वह आपने समाज के प्रति उत्तरदायी बन सकता है। षिक्षा प्रदान करना मानव समाज के उत्तरदायी व्यक्तियों की एक जिम्मेदारी है, जिन्हें अपने आदर्ष, विचार तथा सामाजिक मूल्यों के अनुसार आनेवाली पीढ़ी को षिक्षित और समर्थ बनाना है। सामान्यतः वे सभी बातें षिक्षा की परिधि में आती हैं, जो मानव को एक सुन्दर साँचे में ढ़ालकर उसके विचारों को अनुषासित करती हैं। प्लेटो का कथन है कि मानव अपनी योग्यता के अनुसार
पूर्णता प्राप्त कर ले, यही षिक्षा है।’’1

समाज को उन्नति के षिखर पर पहुँचाने में षिक्षा की महती भूमिका रही है। उन्नत, आदर्ष और व्यवस्थित समाज के लिए साक्षरता की नितांत आवष्यकता है। षिक्षा, ज्ञान आ
षिक्षा की महत्ता पर बल दिया गया है। विष्व भर के विद्वानों और दार्षनिकांे ने

ECONSPEAK Volume 1, Issue 1 (May, 2011) ISSN 2231-4571

Sri Krishna International Research & Educational Consortium http://www.skirec.com
- 175 -

किसी-न-किसी रूप में इसे रेखांकित किया है। यूनानी दार्षनिक प्लेटो ने षिक्षा का उद्देष्य बताते हुए कहा है ’’देह और आत्मा में अधिक-से-अधिक जितने सौंदर्य और जितनी संपूर्णता का विकास हो सकता है, उसे सम्पन्न करना ही षिक्षा का उद्देष्य है।’’2 प्लेटों के षि् षक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा है कि ’’जिन्होंन े ा अध्ययन किया है, उन्हें यह विष्वास हो गया है कि
युवकांे की षिक्षा पर ही राज्य का भाग्य आधारित है।’’3

स्वामी विवेकानंद, षिक्षा के काय Z

प्रत्यक्ष करना ही षिक्षा का कार्य है।’’4

वहीं ’जॉन जी. हिवन’ षि्
कि ’’षिक्षा जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को निभाने की योग्यता है।’’5

पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांरित होती हुई ज्ञान की वृद्धि कर रही है। ज्ञान की यह परंपरागत श्रृखंला ही षिक्षा है जिसके द्वारा मानव ने अपनी मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक प्रगति की है। षिक्षा ने मानव को पष्
बनाया है। चीनी संत कनफ्यूषियस ने ज्ञान के महत्व को बताते हुए कहा है ’अज्ञानता एक ऐसी रात्रि के समान है जिसमें न चांद हैं न तारे।’ षिक्षा के अभाव में ज्ञान और विज्ञान

कृतिक
विरासत को हस्तांतरित करने वाली संस्थाएँ षिक्षण संस्थाएँ कहलाती हैं। फिलिप्स षिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहते हैं कि ’’षिक्षा वह संस्था है जिसका केन्द्रीय तत्व ज्ञान का संग्रह है।’’6

से लैस रहता
है। इन मूल व आदिम प्रवृत्तियों को सुन्दर, स्थायी और व्यवस्थित भावों में परिवर्तित करन े का काम षिक्षा करता है। षिक्षा के कारण ही हम अन्य समुदायों के साथ प्रेम, सहानुभूति, सेवा और त्याग की भावना से पेष आते हैं। पषु में वह प्रवृत्तियां नहीं है, इसलिए अपने ही जाति के दूसरे समुदाय के साथ
की प्रवृत्तियां मौजूद थी। आज भी छिट-पुट घटनाएं देखने को मिल ही जाते हैं। ऐसे समाज को समाजषास्त्रियों ’बर्बर समाज’ की संज्ञा दी है। षिक्षा के फलस्वरूप् ही हम अपने

ECONSPEAK Volume 1, Issue 1 (May, 2011) ISSN 2231-4571

Sri Krishna International Research & Educational Consortium http://www.skirec.com
- 176 -

व्यक्तिगत हित की उपेक्षा कर समाज के हित में स्वयं को उत्सर्ग कर देते हैं। षिक्षा प्राप्त करने के कारण ही हम विविध सामाजिक संस्थाओं का निर्माण करने में सक्षम व समर्थ है ं और विकास के पथ पर आरूढ़ हैं। षिक्षा के कारण ही कला, साहित्य व विज्ञान के क्षेत्र वृद्धि हुई है। आधुनिक समाज में पहुंचने का मूल आधार षिक्षा ही है। षिक्षा के अभाव में मानव का व्यवहार और प्रवृत्तियां एक निम्न कोटि के समान होगी। मानव समाज से अलग हो जाने के कारण कितने बच्चों का विकास अवरोधित हो गया। इसके अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। जिन बच्चों को अच्छी षि्
हैं और इसके विपरित कम भाग्यष्
जीवन में षिक्षक का बड़ा ही महत्व है।

साक्षरता सामाजिक विकास के विभिन्न अंगों से जुड़ी हुई है। ललित नारायण मिथिला विष् डॉ. षक्षा का समाज और स्वास्थ्य पर प्रभाव की चर्चा करते हुए लिखते हैं कि ’जहाँ साक्षरता दर अधिक है, वहाँ देखा गया है कि जन्मदर, मृत्युदर, जन-स्वास्थ्य, स्कूलों में नामांकन, महिला का समाज एवं परिवार में स्थान तथा पिछड ़ों के विकास में भागीदारी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।’

संविधान में देष् षुल्क षिक्षा
देने का प्रावधान है। संविधान की धारा - 45 में षिक्षा के सार्वजनिक का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, जिससे कि स्वतंत्र भारत का प्रत्येक नागरिक षिक्षित हो सके। देष का पहला विष्वविद्यालय बिहार (नालंदा जिला) में स्थापित था, लेकिन विडंबना यह है कि उसी राज्य में षिक्षा की स्थिति और उसकी गुणवत्ता पर सवाल उठ रहे हैं। वर्तमान में देष म ें सबसे अधिक निरक्षरों की संख्या बिहार राज्य में है। 2001 ई. की जनगणना के अनुसार 7 ष भर में 35.40 करोड़ थी, जिसमें 5.12 करोड़ ला ेग
बिहार राज्य के निवासी है।

सन् 2005 ई. में नीतीष कुमार की सरकार बनी, उसके बाद महिला षिक्षा पर
विष् ा ध्यान दिया जाने लगा, राज्य में नारी षिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार के ़द्वारा

ECONSPEAK Volume 1, Issue 1 (May, 2011) ISSN 2231-4571

Sri Krishna International Research & Educational Consortium http://www.skirec.com
- 177 -

पोषाक योजना, मुख्यमंत्री छात्रवृत्ति योजना’ विष्
पर षिक्षा में सुधार के लिए षिक्षकों की बहाली की गई और षिक्षक नियोजन की प्रक्रिया में सरकार ने महिलाओं के लिए 50 प्रतिषत जगह आरक्षित कर दिया। इस तरह बिहार देष का पहला राज्य है, जिसने सरकारी नौकरी में महिलाओं के लिए व्यापक स्तर पर आरक्षण प्रदान किया है।

बिहार राज्य की अधिकांष आबादी गरीबी रेखा के नीचे आती है। ये लोग बहुत दयनीय स्थिति में गुजर-बसर करते हैं। वहाँ के बच्चों के माता-पिता षिक्षण सामग्री -कॉपी, कलम, किताबादि, बैग, पोषाक व अन्य सामग्री पर होने वाले खर्च की वजह से लड़कियों को स्कूल भेजने में संकोच क्यों न करें ? ग्रामीण इलाकों में घर से विद्यालय की अधिक दूरी एवं आवागमन में होने वाली परेषानी की वजह से लड़कियों को षिक्षा अधूरी छोड़नी पड़ती थी। लड़कियांे के इस परेषानी को दूर करने के लिए 2006 ई. में ’मुख्यमंत्री बालिका साईकिल योजना’ कारगर साबित हुई।

नारी षिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा चलाई जाने वाली लाभकारी योजनाओ के फलस्वरूप बिहार में महिलाओं की साक्षरता 4.87 प्रतिषत (1951 ई.) स े बढ़कर 2011ई. की जनगणना में 53.53 प्रतिषत तक पहुँच गई। इससे पहले 2001 की जनगणना में बिहार में महिला साक्षरता दर 33.57 प्रतिषत थी। 2011 की जनगणना रिपो Zट में महिला साक्षरता दर मंे वृद्धि पिछले दषक की तुलना में 20.21 प्रतिषत अधिक है। इस वृद्धि को लेकर बिहार महिला दषकीय साक्षरता दर की वृद्धि में देष्

ट्रीय औसत से बहुत कम है। विष्
की स्थिति अत्यंत दयनीय है। 2011 ई. की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार भारत की औसत महिला साक्षरता 65.46 प्रतिषत है, जबकि बिहार में यह दर लगभग 12 अंक नीचे 53.53 पर ही अटकी हुई है। ’’राज्य सरकार महिला महिला साक्षरता दर में 20.06 प्रतिषत की वृद्धि का आंकड़ा दिखा कर और देष में महिला साक्षरता की वृद्धि में प्रथम स्थान प्राप्त कर भले ही इतराती नजर आयें, किन्तु षिक्षा की गुणवत्ता में कोई सुधार नहीं हुआ है। सरकार द्वारा चलाई गयी अनेक लाभकारी और प्रेरक योजनाएँ भी तब लाचार सी दिखती है, जब उच्च और उच्चतर माध्यमिक के बच्चें अच्छी तरह प्राथमिक विद्यालय की हिन्दी पुस्तक भी

ECONSPEAK Volume 1, Issue 1 (May, 2011) ISSN 2231-4571

Sri Krishna International Research & Educational Consortium http://www.skirec.com
- 178 -

नहीं पढ़ पाते हैं। ’असर’ रिपोर्ट के मुताबिक वर्तमान दष्क में इसमें वृद्धि ही हुई है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय से संबद्ध संसदीय समिति ने हाल में अपनी रिपोर्ट में कहा है कि

तुलना में कम हुई है।

बिहार के पूर्वोत्तर जिलों में महिला साक्षरता की स्थिति और भी दयनीय है। सहरसा, मधेपुरा, सीतामढ़ी, कटिहार, पूर्णिया, किषनगंज आदि जिलों में साक्षरता दर 50 प्रतिषत से भी कम है। राज्य में सर्वषिक्षा अभियान के अंतर्गत बिहार षिक्षा परियोजना द्वारा मौलिक एवं संरचनात्मक कार्य किये गये हैं, जिसके परिणामस्वरूप विष् बालिकाओं, अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अल्पसंख्यकों के बीच षिक्षा का विस्तार संभव हो पाया है। बाल विवाह, लिंग-भेद, दहेज-प्रथा और बढ़ती आबादी जैसी बुराईयों को षक्षित करना बेहद जरूरी है। इस दिषा में हमारी

लिए सरकार को कारगर योजना बनाने की आवष्यकता है। सरकार योजना बनाने के दरम्यान ’असर’ के रिपोर्ट की चेतावनी को ध्यान में रखे। ’असर’ रिपोर्ट के अनुसार ’2010 में कक्षा पांच के 46.3 फीसदी बच्चे कक्षा दो की किताब नहीं पढ़ पाते थे।’

संदर्भ सूची: -

1. बिहार के आदिवासी, डॉ. जियाउद्दीन अहमद, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ.सं. - 186,187
2. अमर सूक्ति कोष, डॉ रामचन्द्र तिवारी, हिन्द पॉकेट बुक्स, पहला रिप्रिंट संस्करण: 2006, पृ.सं. - 281
3. अमर सूक्ति कोष, डॉ रामचन्द्र तिवारी, हिन्द पॉकेट बुक्स, पहला रिप्रिंट संस्करण: 2006, पृ.सं. - 282
4. अमर सूक्ति कोष, डॉ रामचन्द्र तिवारी, हिन्द पॉकेट बुक्स, पहला रिप्रिंट संस्करण: 2006, पृ.सं. - 281
5. अमर सूक्ति कोष, डॉ रामचन्द्र तिवारी, हिन्द पॉकेट बुक्स, पहला रिप्रिंट संस्करण: 2006, पृ.सं. - 282
6. च्ीपससपचेए ठण्े रू ेवबपवसवहलएैजतनबजनतम ंदक ब्ींदहमए पृ.सं. - 305